शोध–प्रभा (ISSN : 0974-8946)
(A REFERRED & PEER- REVIEWED QUARTERLY RESEARCH JOURNAL)

कुमाऊँनी लोकगीतों में निहित धार्मिक मान्यतायें एवं आस्थायें–झोड़ा एवं जागर गीतों के परिपेक्ष्य में

डॉ0 सबीहा नाज़
विभागाध्यक्ष संगीत, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, परिसर अल्मोड़ा।

अशोक चन्द्र टम्टा
शोधार्थी संगीत, सोबन सिंह जीना परिसर अल्मोड़ा।

सारांश– भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत क्षेत्र विशेष अर्थात् कुमाऊँ क्षेत्र की संस्कृति अपनी परम्पराओं एवं मान्यताओं के कारण अति विशिष्ट है। जिसमें निहित कुमाऊँनी लोकगीत जन मानस की स्वछन्द परमपरा है। कुमाऊँनी समाज में इन गीतों के माध्यम से यहाँ की लोक संस्कृति, लोक परम्पराओं का चित्रण देखने को मिलता है। कुमाऊँनी लोक गीतों में ऐतिहासिक परम्पराओं धार्मिक आस्थाओं और मान्यताओं का बोध होता है। कुमाऊँनी समाज में परिलक्षित झोड़ा एवं जागर गीतों में धार्मिक मान्यतायें एवं आस्थायें सन्निहित हैं।

मुख्य शब्द– कुमाऊँ, कुमाऊँनी लोकगीत, धार्मिक मान्यताएँ, आस्थाएँ।

उद्देश्य– कुमाऊँनी लोक गीतों में समाहित धर्म सम्बन्धी मान्यताओं एवं आस्थाओं को जानना।

लक्ष्य– कुमाऊँनी लोक गीतों में निहित मान्यताओं एवं आस्थाओं के प्रभाव को समाज में परिलक्षित करना।

प्रस्तावना– भारतीय संस्कृति विश्व की अति विशिष्ट संस्कृति है, वर्षों से भारत की सांस्कृतिक प्रथाओं, भाषाओं, रीति–रिवाजों आदि में विविधता दृष्टिगोचर होती है, जो कि आज भी विद्यमान है और यही अनेकता में एकता भारतीय संस्कृति की विशेषता है। यहाँ सभ्य संचार, विश्वास, मूल्य, शिष्टाचार और अनुष्ठान समाहित हैं। भारत ने सम्पूर्ण विश्व को विविधता में एकता को प्रमाणित किया है। जहां विविध संस्कृतियाँ व्याप्त हैं 'संस्कृति' शब्द संस्कृत के 'कृ' धातु से 'क्तिन' प्रत्यय और 'सम' उपसर्ग को जोड़कर बना है। समकृक्ति = संस्कृति। वास्तव में संस्कृति शब्द का अर्थ अत्यन्त ही व्यापक है, कुछ विद्वान् संस्कृति को संस्कार का रूपान्तरित शब्द मानते हैं। संस्कृति शब्द संस्कार से बना है। वायु पुराण में 'धर्म', 'अर्थ', 'काम', 'मोक्ष' तथा धार्मिक, दार्शनिक, कलात्मक, नीतिगत विषयक कार्य–कलापों, परम्परागत प्रथाओं, खान–पान, संस्कार इत्यादि के समन्वय को संस्कृति कहा गया है। जहां कई धार्मिक लोग अपनी अलग संस्कृतियों को सजोये हुए शांति एवं सौहार्द बनाए हुए हैं। भारतीय संस्कृति में शिष्टाचार, तहजीब, सभ्य संवाद, धार्मिक संस्कार, मान्यताएँ और मूल्य इत्यादि का समन्वय होता है। यहाँ सभी प्रान्तों की अपनी–अपनी बोली भाषा, रहन सहन, खान–पान, वेषभूषा, तीज, त्यौहार, मनाने की अपनी विशिष्ट परम्पराएँ एवं मान्यताएँ हैं। इन संस्कृतियों में भारत का

सांस्कृतिक प्रदेश उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्र कुमाऊँ का भी अपना एक विशिष्ट स्थान है। ''कुमाऊँ'' शब्द को 'कूर्मांचल' का तद्भव रूप माना जाता है। कुमाऊँ उत्तराखण्ड का एक महत्वपूर्ण रमणीय पहाड़ी क्षेत्र है। देवी–देवताओं, ऋषि–महात्माओं और गंधर्वों की यह पावन धरती सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यन्त समृद्धशाली है। कुमाऊँनी भाषा भारत के उत्तराखण्ड राज्य के अन्तर्गत कुमाऊँ क्षेत्र में बोली जाती है। इस बोली को हिन्दी की सहायक पहाड़ी भाषाओं की श्रेणी में रखा जाता है। कुमाउँनी बोली का विकास खस प्राकृत समुदाय से हुआ है। किसी क्षेत्र या प्रदेश की संस्कृति का परिचय क्षेत्र विशेष की भाषा, लोक गीत, लोक साहित्य, धार्मिक आस्थायें, मान्यताएँ, क्षेत्र विशेष को प्रतिबिम्बित करती हैं।

''यतो ऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः''।[1]

धर्म वह अनुशासित जीवन क्रम है, जिसमें लौकिक उन्नति एवं आध्यात्मिक परमगति की प्राप्ति होती है। कुमाऊँ के लोगों में धर्म के प्रति अटूट प्रेम है तथा धर्म ही यहां के लोगों का प्राणाधार है। यहां हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई सभी धर्मों के लोग आपस में प्रेमपूर्वक रहते हैं। जीवन के प्रत्येक कर्म, तीज–त्यौहार, उत्सव, पर्व, पौराणिक एवं स्थानीय देवी–देवता इत्यादि सभी धर्म से जुड़े हैं। यह देवभूमि है, जहाँ देवताओं का अधिवास है। धर्म भारतीय संस्कृति का प्राण तत्व है। संसार के सभी धर्मों का सार एक है। धर्म ही लोगों की जीवन शक्ति भी है, जो कि यहां की विषम भौगोलिक पस्थितियों एवं आर्थिक कठिनाइयों के बीच सकारात्मक शक्ति प्रदान करती है जिससे भयानक कष्टों एवं असहनीय पीड़ाओं को भी मनुष्य ईश्वरीय देन समझकर ग्रहण कर लेते हैं। यहां के जनसमुदाय में धार्मिक विश्वास और धार्मिक मान्यताओं को मानने की परम्परा प्राचीन रही है। सृष्टि के प्रारंभिक काल से ही मानव सृष्टि को एक अलौकिक घटना के रूप में समझते आया है। तभी से मनुष्य को अलौकिक शक्ति पर विश्वास है। जैसे–जैसे मानव के ज्ञान में वृद्धि हुई तो मानव ने वैज्ञानिक व्याख्या करने का कार्य प्रारम्भ किया। इस प्रकार अलौकिक शक्ति पर मनुष्य का विश्वास धीरे–धीरे विकसित होते गया जिसने परम्परागत रूप ले लिया। उन्हीं मान्यताओं और धार्मिक आस्था का वर्तमान पीढ़ी भी अनुसरण कर रही है।

आस्था का अर्थ किसी विषय–वस्तु, के प्रति विश्वास का भाव है। साधारण शब्दों में ज्ञान के आधार के विना किसी भी परिकल्पना को सत्य मान लेना आस्था कहलाता है। परन्तु इसका व्यापक अर्थ भी है जो बुद्धि के पार है। क्योंकि किसी परिकल्पना पर विश्वास कर लेने के लिए बुद्धिमता की जरूरत नहीं है। आस्था के व्यापक अर्थ को जानने के लिए ज्ञान की, बुद्धिमता की जरूरत पड़ती है। वास्तव में आस्थावान होने का आशय आस्तिक होने से है। साधारण मनुष्य जिसे आस्था समझता है वह अंधविश्वास का रुप ले लेता है। क्योंकि विश्वास बुद्धि से नीचे है। आस्था और विश्वास दो ऐसे शब्द हैं, जिसके आशय एक जैसे प्रतीत होते हुए भी भिन्न होते हैं। ये एक नदी के दो किनारे की तरह हैं जो एक साथ चलते हैं। एक की वजह से दूसरे का अस्तित्व है, परन्तु एक दूसरे से भिन्न हैं। आस्था मनुष्य को ईश्वर से जुड़ने की एक काल्पनिक प्रकिया है। जीवन के अनुभवों के आधार पर आस्था निर्मित होती है। आस्था मनुष्य को विरासत से भी प्राप्त होती है। साधारण मनुष्य उसी में विश्वास कर लेता है, जिसके विषय में पुरखे उसे सुनाते हैं। विश्वास मनुष्य की मूल प्रकृति है, जबकि आस्था उसके संस्कारों का परिणाम होता है। जिसका प्रमाण हम अल्मोड़ा में स्थित प्रसिद्ध चितई गोलज्यू

मंदिर में देख सकते हैं। जहां लाखों की संख्या में घंटियाँ एवं हस्त लिखित पत्र संलग्न किये गए हैं। जो कि जन विश्वास एवं आस्था का प्रतीक है। ऐसी मान्यता है कि अगर हम अपनी व्यथा या इच्छा को पत्र के माध्यम से गोलू देवता को प्रेषित करते हैं तो वहां हमारी सारी मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। इस प्रकार यहां लोग पत्र लिखकर घंटियों के साथ बांध देते हैं। यह धार्मिक मान्यताओं का प्रचलन प्राचीन समय से रहा है, जिसे वर्तमान समय में भी देखा जा सकता है। कुमाऊँनी संस्कृति में यह परम्परा पारलौकिक शक्ति पर विश्वास एवं जीवनवाहिनी के रूप में दृष्टिगत होती है।

यदि हम कुमाऊँनी लोक गीतों को देखें तो इन गीतों में भी हमें आस्थायें और मान्यतायें देखने को मिलती हैं। जिनका वर्णन करने से पूर्व हमें लोक गीत शब्द को समझ लेना अनिवार्य होगा। लोक गीत **लोक** और गीत दो शब्दों का योग है जिसका अर्थ है लोक के गीत। लोक शब्द वास्तव में अंग्रेजी के 'फोक' का पर्याय है जो लोक के द्योतक हैं। लोक' शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम नहीं है। बल्कि नगर एवं ग्रामों में विकसित हुई समुचित जनसमुदाय है। लोक से तात्पर्य 'गीत' शब्द का अर्थ प्रायः उस कृति से है जो गेय हो, लोकगीत में गेयता का होना आवश्यक है, संगीत एवं लय उसका प्राण है अतः इसी कारण लोकगीत को स्वतः स्फूर्त संगीत कहा गया है। इसी सन्दर्भ में कंमाऊँनी लोक गीतों की भी अपनी विशेष परम्परा है। कुमाऊँ में लोक गीतों की परम्परा बहुत पुरानी होने के पश्चात् भी ये अपने मूल रूप को सुरक्षित रखने में असमर्थ है क्योंकि मौखिक परम्परा के द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होने वाले इन गीतों में समय के साथ–साथ आमूलचूल परिर्वतन होते रहते हैं। यहाँ के लोककवियों ने धार्मिक वातावरण एवं प्रकृति से प्रेरित होकर अपने गीतों को मिठास भरे स्वरों से सजाया है। कुमाऊँनी लोक गीतों में **संस्कार गीत** के अन्तर्गत जन्म के गीत, चूड़ाकर्म के गीत, जनेऊ के गीत, विवाह गीत, मांगल गीत गाए जाते हैं। ये गीत स्त्रियों के द्वारा बिना वाद्यों की संगत के गाए जाते हैं। इनकी धुनें ताल रहित होती हैं, और इनकी धुनें एक समान धुन में होती हैं। **धार्मिक गीतों** के अन्तर्गत जागर, भूत–भैरव और ऐड़ी आंचरियों के गीत गाए जाते हैं। **ऋतु गीत** के अन्तर्गत चैती, भगनौल, आते हैं। **नृत्य गीत** के अन्तर्गत झोड़ा, चाँचरी, छोलिया नृत्य के गीत आते हैं। मुख्यतः विभिन्न मेलों में इन नृत्य–गीतों का गायन होता है। स्त्री एवं पुरूष कभी द्रुत तो कभी विलंबित में मस्ती भरे अंदाज में इसे गाते हैं। कुमाऊँ में कई ऐसे लोक गीत गाए जाते हैं जिसमें आस्थाओं और मान्यताओं के साक्षात दर्शन होते हैं जिनका वर्णन निम्नवत है।

झोड़ा –उत्तराखण्ड के कुमाऊँ क्षेत्र का सुप्रसिद्ध नृत्य प्रधान गीत है। इसमें महिला एवं पुरूष एक दूसरे के कंधो एवं कमर में हाथ डालकर वृत्ताकार घेरे में सामूहिक नृत्य करते हैं। कुछ झोड़े गीत धार्मिक आस्थाओं और परम्पराओं पर आधारित होते हैं जिनमें देवी–देवताओं एवं प्रकृति का मनोरम चित्रण देखने को मिलता है। झोड़ों के दो रूप होते हैं – मुक्तक और प्रबंधात्मक। मुक्तक गीतों में लय वैविध्य रहता है और प्रबंधात्मक गीतों मे समान लय होती है। प्रबंधात्मक झोड़ों में स्थानीय देवी देवताओं, ऐतिहासिक या वीर पुरूषों के चरित्र का गान किया जाता है। उदाहरणत स्वरूप प्रबन्धात्मक झोड़ा प्रस्तुत है–

''आहा गोरी गंगा भागरथी को के भलो रेवाड़ा।
आहा खोल दे माता खोल भवानी, धार में केवाड़ा।

आहा के ले रैछे भेट पखोआ, के खोलूं केवाड़ा।
आहा खोल दे माता खोल भवानी धार में केवाड़ा।
आहा द्वी जौंया बाकारा लैर्यू, तेरो दरबारा।
आहा खोल दे माता खोल भवानी धार में केवाड़ा।
आहा फल लैर्यूं फुल लैर्यूंय, तेरो दरबारा।
आहा खोल दे माता, खोल भवानी, धार में केवाड़ा।''[2]

अर्थात् इस भक्ति परक झोड़ा गीत में गोरी गंगा और भागरथी नदी के समतल नदी घाटी का वर्णन किया गया है और यहां देवी माँ दुर्गा के भक्त माता से विनती कर रहे हैं कि मैं तेरे दर्शन करने आया हूँ माँ कृपया अपने परम भक्त के लिए भक्ति के द्वार खोल दीजिए। माता अपने भक्त से पूछती है अपनी माता की भक्ति आराधना के लिए क्या लेकर आये हो कि भला मैं क्यों तुम्हारे लिए दरावाजा खोलूं। भक्त कहता है कि माँ मैं तुम्हारे दरबार में दो जुड़वे बकरियाँ लेकर आया हूँ, और ढेर सारे फूल और फल से भरे टोकरियाँ लेकर आया हूँ। यह झोड़ा मनुष्य के ईश्वर के प्रति आलोकिक प्रेम, विश्वास और आस्था को प्रदर्शित कर उसके साक्षात दर्शन कराता है।

जागर–कुमाऊँ में देवता विशेष की पूजा में जागर का अपना विशेष महत्व है, किसी भी देवता को प्रसन्न करने के लिए जागर का आयोजन किया जाता है। जागर का अर्थ है कि **ईष्ट देवता** के निमित रात भर जागरण करते हुए पूरी रात देवता के विशेष गुणों का कीर्तन करना, अर्थात् बखान करना। ढोल, दमाऊँ, हुड़का, थाली आदि बाजों के साथ गीत गाते नाचते कूदते देवता के गुणों का तथा उसके आलौकिक कृत्यों का बखान जागर में रातभर जागरण करके किया जाता है। जागर धार्मिक गाथाएँ हैं जो किसी जीवित शरीर में मृत प्राणी या लोक–देवता का अवतरण करने के लिए गाई जाती है। जागर में स्वर और लय की प्राधानता होती है जिसकी सहायता से देवता का नृत्य करते हुए अपने चमत्कारों का प्रदर्शन रहता है। जागर गीत कुमाऊँनी समाज में देवी–देवताओं से निमित्त आस्थाओं परम्पराओं, और मान्यताओं के साथ जुड़े हुए हैं। इन गीतों में यहां के समस्त जनमानस का अट्ट विश्वास रहा है। इन गीतों के गायन से यहां के लोगों में सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलते हैं मानसिक और सकारात्मक दोनों रूप से व्यक्ति स्वयं को स्वस्थ महसूस करता है, ये गीत मांसिक तनाव और रोगों को दूर करने में भी सहायक सिद्ध हुए हैं।

गंगनाथ जागर गीत

''ओ उणनी निशाण उणनी निशाण,
आफत आई गेद्द भानवे ओ गंगूआ जोगी,
डोटी को निशाणा भानवे
ओ गंगुआ जोगी,
कालि को मसाणा आ ऽ ऽ ऽ,
ओ गहतुआ बाणा, गहतुआ बाणा, बटुआ मसाणा,
त्वीलै उल्टा फाड़ी डालो भानवे,
ओ गंगुआ जोगी उल्टा फाड़ी डालो।''[3]

अर्थात् भानवा और गंगुवा जोगी एक ही दल में सम्मिलित हैं जिनका प्रतीक चिन्ह फहरा रहा है।

भानवा और गंगुआ जोगी जो कि देवतागणों के दल में है वह कह रहे हैं कि हम मुसीबत में है। भानवे और गंगंवे के साथ डोटी देवता भी सम्मिलित है जिनका भी प्रतीक चिन्ह है। भानवे,और गंगुआ काली माता गहतवा और बटुआ मसाण (देवतागढ़) से कह रहे हैं कि जिस कार्य को करना था उसका विपरीत प्रभाव पड़ रह है जिस कारण हमारी समस्या सही होने के बजाय अत्यधिक बढ़ गई है।
अतःतात्पर्य यह है कि देवी–देवताओं के दल–बल का झुंड जब एक साथ एकत्रित होता है तो वह तरह–तरह के भाव भंगिमाओं के माध्यम से मनुष्य को छलने का कार्य करती है इस प्रकार जागर गायन में जब वाद्य यन्त्रों की धुन गूंज उठती है तो देवताग गण अपनी विकृष्ट मुद्राओं से मनुष्य को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। तब जगरिया देवी–देवताओं को अपने बस में करने के लिए मन्त्रोचार करता है और सभी देवी–देवताओं का आह्वान किया जाता है।

नंदा देवी के जागर

''पंस्या पंस्यांणा द्वि छन पराणी
फैले रचायो सारोबरमाण्ड
फैले रचायों धरती आगास
पंस्यांणा द्वि छन पराणी''[4]

अर्थात् पंस्या और पंस्याणा दो प्राणी हैं जिनसे जो देवतागणों के साथ हैं जिनसे सम्पूर्ण ब्रह्मण्ड एवं धरती आकाश की उत्पत्ति मानी गई है किसने धरती और आकाश की रचना की इस प्रकार पस्या और पस्यांण दो ही प्राणी हैं। इस प्रकार उत्तेजित होकर जब देवता गणों को प्रश्न पूछे जाते हैं तो वह अत्यधिक उत्तेजित होकर उत्तर देते हैं। इस प्रकार कुमाउँनी लोक गीतों में धार्मिक आस्था और मान्यताओं का प्राचीन समय से शिलशिला चला आ रहा है जिसे वर्तमान पीढ़ी भी इन मान्यताओं में विश्वास करती है।

निष्कर्ष– अतः निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति अद्वितीय स्थान रखती है, जिसमें विविध क्षेत्रीय संस्कृतियाँ समाहित हैं क्षेत्र विशेष की परम्पराएँ, विशिष्टताएँ, मान्यताएँ, संस्कार कर्म, आचार, विचार इत्यादि उस क्षेत्र के द्योतक होते हैं क्षेत्र विशेष अर्थात् कुमाऊँ क्षेत्र देवभूमि के नाम से सुविख्यात है जहां की अपनी विशिष्ट परम्पराएँ, मान्यताएँ एवं आस्थाएँ विशिष्ट महत्व रखती हैं। कुमाउँनी संस्कृति में निहित विविध गीत जैसे संस्कार गीत, धार्मिक गीत, ऋतृ गीत, नृत्य गीत इत्यादि गाए जाते हैं उक्त शोध से हमें यह ज्ञात हुआ कि धार्मिक गीतों के अन्तर्गत जागर गीत एवं नृत्य गीतों के अन्तर्गत झोड़ा गीत कुमाऊँ में गाए जाने वाले ऐसे गीत हैं जिन पर सम्पूर्ण समाज की आस्था, निष्ठा एवं विश्वास बना हुआ है। कुमाऊँ क्षेत्र में देवी देवताओं के मंदिर एवं धर्मस्थल हैं। प्रस्तुत झोड़ा गीत में कुमाउँनी समाज के ईश्वरीय प्रेम एवं धार्मिक आस्था के साक्षात दर्शन होते हैं, एवं जागर गीतों में कुमाउँनी जन समाज का अट्ट विश्वास परिलक्षित होता है। इन जागर गीतों में गायन एवं वादन की वीर रस प्रधान ध्वनियाँ सकारात्मक प्रभाव छोड़ती हैं। जिसका मुख्य उद्देश्य देवी–देवताओं को प्रसन्न करके क्षेत्रीय समाज में सुख और शान्ति का संचार करना होता है। अतः यह कह सकते हैं कि झोड़ा गीत एवं जागर गीतों में कुमाउँनी समाज की धार्मिक आस्थाएँ एवं

मान्यताएँ दृष्टिगत होती हैं।

संदर्भ सूची

1. श्रीमद् भगवत गीता / (कणाद, वैशेषिकसूत्र,1.1.2)
2. पेटशाली जुगल किशोर (2012) कुमाउनी लोक गीत, मीनाक्षी प्रकाशन दिल्ली पृ.सं.133
3. तिवारी डॉ0 ज्योती(2002) कुमाउनी लोक गीत तथा संगीत– शास्त्रीय परिवेश, कनिष्का पब्लिशर्स, डिस्ट्रीव्यॅटर्स, पृ.सं.47
4. यजुर्वेदी डॉ0 सरिता पाठक (2011) उत्तराखण्ड संगीत एवं संस्कृति, आयुश पब्लिशिंग हाउस, सुबास पार्क सहादरा, पृ.सं.214